ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन

Effect of Craft Centered Instructional Strategies Upon Creativity

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

डी0 वसन्ता
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीटूट,
आगरा, उ०प्र०, भारत

ज्योति
शोधार्थी
शिक्षा विभाग,
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीटूट,
आगरा, उ०प्र०, भारत

सारांश

प्रयोगात्मक अनुसंधान द्वारा शिल्प आधारित रणनीतियों के क्रियान्वयन करने पर छात्राओं के बौद्धिक क्षमताओं के विकास के साथ–साथ उनके कौशल एवं सृजनात्मकता पर भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रयोग के क्रियान्वयन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 30 शिल्प आधारित पाठ योजनाओं का निर्माण किया गया था और उनके द्वारा कक्षा शिक्षण कराते हुए छात्राओं से शिल्प आधारित क्रियाओं का आयोजन भी कराया गया था। छात्राओं की सृजनात्मकता पर इन रणनीतियों के प्रभाव निर्धारण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण किया और परिणाम में छात्राओं की सृजनात्मकता पर शिल्प आधारित रणनीतियों से शिक्षण कराने पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

Implementation of Craft Centered Instructional Strategies through Experimental Study effects not only on the Intellectual activities of students but also upon the skills and creativity of them. In this experiment Researcher constructed 30 craft centered lesson plans and various craft based activities were applied in the classroom teaching. To analyze the effect of Craft Centered Instructional Strategies Mean, Standard-deviation and t-test were applied and results established that there was a significant effect found in the pre-test and post test scores of craft centered Instructional strategies upon creativity.

मुख्य शब्द : शिल्प आधारित, अनुदेशात्मक रणनीतियॉ, सृजनात्मकता, सामग्री की वैधता सूचकांक, अर्द्धविच्छेदन विधि Craft based, Instructional, Strategy, Creativity, CVI – Content validity index, SHM – Split half method

प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षा नीति (2020) के प्रारूप के अनुसार पाठ्यक्रम को रट्न विद्या से दूर एवं वास्तविक अनुदेशन की ओर ले जाना है, जिससे छात्राओं में 21वीं शताब्दी के कौशलों का विकास हो और उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके। शिल्प आधारित अनुदेशन के माध्यम से शिक्षक छात्राओं की उपलब्धि एवं रूचि के साथ–साथ उनमें कौशलों एवं सृजनात्मकता के विकास सम्भवत् प्राप्त कर सकते हैं। अनुदेशन का अनुकरण करते हुए छात्राओं में करके सीखने की प्रक्रिया के द्वारा स्वयं की सृजनात्मकता का विकास कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. व्याकरण शिक्षण में शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों के आधार पर पाठ योजनाओं का निर्माण करना।
2. व्याकरण शिक्षण में शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों का सृजनात्मकता के पूर्व एवं पश्च् प्राप्तांको में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

राष्ट्रीय स्तर पर सृजनात्मकता से सम्बन्धित हुए अध्ययन

नीरा पाण्डेय (2018), उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन, सुरेन्द्र कुमार (2018), माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन

आदतों सृजनात्मकता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, काटोच (2017), द्वारा सेकेंडरी स्कूल टीचर्स एटिट्यूड टुवर्ड्स क्रियेटिव टीचिंग, विषय पर अध्ययन किया, हंसराज (2010), उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव, लता कमल (2010) ''हिन्दी विषय शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन'', पांडा, एम. तथा यादव, आर (2005), भारत में सृजनात्मक सिद्धान्तों का प्रतिपादन पर अध्ययन किया, चौधरी, विनीत (2003), ने ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का आकांक्षा स्तर एवं व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध का अध्ययन'' किया, शर्मा कीर्ति (2003) ने हिन्दी भाषा के सन्दर्भ में सृजनात्मकता व शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन किया, शर्मा, ऋचा (2002) विज्ञान के छात्रों की सृजनात्मकता का उनके समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन व सिंह, आर0पी0 (2000), द्वारा क्रियेटिविटी ऐज ए फेंक्शन ऑफ एडजस्टमेंट का अध्ययन किया।

अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सृजनात्मकता से सम्बन्धित हुए अध्ययन

शर्मा रेणुका (2009), ने विद्यालयी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता का अध्ययन किया, चैरिटॉन क्रिस्टाइन (2008), अभियांत्रिकी एवं संगीत के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता (वैज्ञानिक, कलात्मक व सामान्य) और आपत्ति सहनशीलता पर अध्ययन किया, शर्मा एकता (2006), ने किशोरों में सृजनात्मकता का शैक्षिक निष्पत्ति उपलब्धि, अभिप्रेरणा, आत्म प्रत्यय एवं समायोजन के स्तर से सम्बन्ध का अध्ययन किया, धोबेनन एन (2005), स्वनियमन एवं सृजनात्मकता के मध्य सम्बन्ध पर अध्ययन किया, चैरिपन क्रिस्टाइन (2005), ने अभियांत्रिकी एवं संगीत के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता और आपत्ति सहनशीलता पर अध्ययन किया, यून. सॉग, एन (2004), एशियन अमेरिकन प्रतिभावान विद्यार्थियों का कोकेसियन प्रतिभावान विद्यार्थियों से बुद्धि एवं सृजनात्मकता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन, मलनी (2003), ने कक्षा–9 के विद्यार्थियों की गणित विषय में, वृद्धि एवं निपुणता अधिगम कुशलता का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया, नवानक्वो ओ0सी0 एवं केम्जिका ओ0जी0 (2003), ने नाइजिरिया के ऐनाम्ब्रा राज्य के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति एवं उत्कंठा के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन किया। एलिस के पघ (2002), ने गणित एवं अंग्रेजी भाषा के सम्बन्ध में सातवीं ग्रेड के विद्यार्थियों पर विद्यालय उपरान्त कार्यक्रम का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया। कैली, के.ई. (2001), कॉलेज के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता का मापन। मिश्रा श्रुति एवं शुक्ला श्रृद्धा (2001), ने समायोजन एवं आवश्यक उपलब्धि का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया।

शोध अध्ययन को प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह (Experimental and Control group)–दोनों समूहों पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्रारूप को प्रयुक्त किया गया। न्यादर्श के रूप में प्रेम विद्यालय इण्टरमीडिएट कॉलेज की कक्षा 9 में अध्ययनरत 60 छात्राओं का चयन किया गया। उनके लिए स्वनिर्मित मापनियों का निर्माण किया गया था। स्वयं निर्मित सृजनात्मक मापनी के 30 पदों का निर्माण पंचपदीय लिकर्ट स्केल पर किया गया है। CVI (Content Validity Index) .78 ज्ञात किया गया है और मापनी की विश्वसनीयता मान .92 प्राप्त हुआ।

नियंत्रित समूह तथा प्रयोगात्मक समूह का टी–मान 0.66 तथा 4.17 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.5 पर सार्थक पाया गया। अतः यह ज्ञात हुआ कि व्याकरण शिक्षण में शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों का सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पडता है। अतः परिकल्पना ''शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों का सृजनात्मकता के पूर्व एवं पश्च् प्राप्तांको में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' पूर्णतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है। शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों के माध्यम से छात्राओं में ध्यान, रूचि तथा एकाग्रता से संलग्नता, के कारण सृजनात्मकता का विकास होता है। इसलिए दोनों समूहों के मध्य अन्तर पाया गया।

शिक्षण अधिगम प्रणाली में छात्राओं के ध्यान को केन्द्रित करने के लिए शिल्प आधारित अनुदेशन प्रदान करें तो छात्राओं के अधिगम को विकसित किया जा सकता है। इसलिए परम्परागत शिक्षण की अपेक्षा प्रयोगात्मक शिक्षण को प्रभावी माना गया है। क्योंकि शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों से छात्राओं में सृजनात्मकता उत्पन्न होती है और वह विभिन्न प्रकार की भूमिका का निर्वाहन करती हैं, जो समावेशीय सिद्धान्त शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक समावेशीय कक्षा में, शिक्षक की भूमिका एक सुविधाकर्त्ता एवं निर्देशक के रूप में मानी जाती है। शिक्षक कक्षा का नियन्त्रणकर्त्ता नहीं बल्कि प्रबन्धक होता है। विद्यार्थी स्वयं अधिगम करने का उत्तरदायित्व लेते है। वे प्रश्न, समस्या कथन अनुभव प्रारूप और दूसरों के साथ अपने परिणाम की चर्चा करते है।

निष्कर्ष

छात्राओं के द्वारा शिल्प आधारित सामूहिक क्रियाओं को स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया से छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ सहयोग, संगठन, योजना निर्माण, कौशल विकास, निर्भरता एवं आत्म विकास बढ़ जाता है। जिससे छात्राओं के शिक्षण में वांछित अधिगम परिणामों को प्राप्त कर सकते है। अतः शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियां छात्राओं के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं कौशलात्मक पक्षों का विकास करके उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अस्थाना एवं अस्थाना, (2005), ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', पुस्तक मंदिर आगरा –2, पृष्ठ 423–439, 201–210।*
2. *डॉ श्रीवास्तव, डी. एन., 2001, ''न्यादर्श के आकार का निर्धारण अनुसंधान विधियाँ सांख्यिकीय सहित '', कॉलेज साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ.60।*
3. *Albert, R. S.; Runco, M. A. (1999). ":A History of Research on Creativity". In Sternberg, R. J. (ed.). Handbook of Creativity. Cambridge University Press. p. 6.*
4. *Archived from the original (PDF) on 18 December 2011. Retrieved 23 October 2010.; cf. Michel*

Weber, "Creativity, Efficacy and Vision: Ethics and Psychology in an Open Universe," in Michel Weber and Pierfrancesco Basile (eds.), Subjectivity, Process, and Rationality,

5. *Batey, M.; Furnham, A. (2006). "Creativity, intelligence and personality: A critical review of the scattered literature". Genetic, Social, and General Psychology Monographs. 132 (4): 355–429. doi:10.3200/mono.132.4.355-430.*
6. *Batey, M.; Furnham, A. F.; Safiullina, X. (2010). "Intelligence, General Knowledge and Personality as Predictors of Creativity". Learning and Individual Differences. 20 (5): 532–535. doi:10.1016/j.lindif.2010.04.008*
7. *Gabora, L. & Saab, A. (2011). Creative interference and states of potentiality in analogy problem solving. Proceedings of the Annual Meeting of the Cognitive Science Society. July 20–23, 2011, Boston MA.*
8. *Niu, Weihua; Sternberg, Robert J. (2006). "The Philosophical Roots of Western and Eastern Conceptions of Creativity" (PDF). Journal of Theoretical and Philosophical Psychology. 26 (1–2): 18–38. doi:10.1037/h0091265.*
9. *Ward, T.B. (1995). What's old about new ideas. In S. M. Smith, T. B. Ward & R. A. & Finke (Eds.) The creative cognition approach, 157–178, London: MIT Press.*
10. *Weisberg, R. W. (1993). Creativity: Beyond the myth of genius. Freeman. ISBN 978-0-7167-2119-2.*